दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL2**

Name: Alok Prasad **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** 7100

Center & Date: 17 July M. Nagar **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 5907765

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

रामस्वरूप चतुर्वेदी का साहित्येतिहास लेखन में उस समय हुआ जब रामचंद्र शुक्ल व हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकार साहित्येतिहास लेखन कर को अपने प्रतिमा से परिपूर्ण कर चुके थे। इसके बावजूद रामस्वरूप चतुर्वेदी नया इतिहास बोध देने में सफल रहे हैं।

रामस्वरूप चतुर्वेदी ~~की पुस्तक~~ द्वारा 'हिंदी साहित्य की संवेदना' और 'विन्यास' ~~में~~ नामक पुस्तक में इतिहास लेखन हुआ। इस पुस्तक के शीर्षक के शब्द 'संवेदना' का आशय (साहित्य का जनता की चित्तवृत्तियों के अनुरूप होना) है। तथा 'विन्यास' का आशय (साहित्य में परंपरा का योगदान) है। अतः स्पष्ट है कि चतुर्वेदी अपनी समन्वयात्मक दृष्टिकोण की जड़ से शुक्ल जी और 'द्विवेदी जी' में समन्वयात्मक दृष्टिकोण स्थापित करने में सफल रहे हैं।

रामस्वरूप चतुर्वेदी इसके बावजूद शुक्ल जी के दृष्टिकोण से अधिक प्रभावित रहे हैं। इसके दर्शन वहाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होते हैं जहाँ शुक्ल जी और डेवेडी जी में विरोधाभास हो। उदाहरण हेतु भक्ति आंदोलन के इस्लाम के प्रभाव से उदय की व्याख्या। हालांकि इसमें नामवर उन्होंने कहीं-कहीं शुक्ल जी से इतर मौलिक दृष्टिकोण का भी उदय किया है।

चतुर्वेदी जी ने साहित्यकार की भाषा में अनुभूतियों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए अज्ञेय के उदाहरण के माध्यम से समझाते हैं

"वेदना एक शक्ति है" - गद्य

"दुःख सबको मांजता है" - पद्य

अज्ञेय की गद्य की भाषा का तत्सम होना उनके चिंतनशील व्यक्तित्व का प्रमाण है। वहीं पद्य की भाषा का तद्भव होना अनुभूतिमूलक व्यक्तित्व का प्रमाण है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा का परिचय और महत्त्व

इप्टा - अर्थात् 'इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' का जन्म 1944 ई० में स्वतंत्रता आंदोलन के गर्भ में हुआ। ~~यह समय~~ ध्यातव्य है इस समय तक हिंदी रंगमंच के स्तर पर कोई भी प्रोफेशनल संस्था का उदय नहीं हुआ था।

इप्टा में उस समय के सभी प्रगतिवादी साहित्यकार एवं प्रगतिवाद में रुचि रखने वाले साहित्यकार जुड़े हुए थे। इप्टा के द्वारा मुख्यतः चार विषयों पर नाटकों का मंचन किया गया - साम्राज्यवाद विरोध, हिंदू मुस्लिम एका, पूंजीवादी के विकृत रूपों का विरोध तथा सामंतवाद विरोध

इप्टा ~~को~~ नाटकों के रंगमंचन में प्रतिष्ठित कलाकार, पाश्चात्य तकनीक इत्यादि का सहयोग मिला।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिष्ठित कवि हैं। घनानंद की काव्यभाषा परिनिष्ठित ब्रजभाषा है।

आचार्य शुक्ल जी ने घनानंद की ब्रजभाषा की प्रशंसा करते हुए कहा है कि - "भाषा पर इनका जैसा अचूक अधिकार मिला अन्य का नहीं" साथ ही वह घनानंद की व्याकरणिक विशेषताओं की भी तारीफ करते हैं।

ध्यातव्य है कि घनानंद रीतिकाल में होकर भी रीतिवादी मनोवृत्ति से ग्रस्त नहीं है। उनके लिए भाषा और साहित्य अनुभूति का मामला है, ताकि राजाओं की प्रशंसा या चटुकारिता का। अतः यहाँ घनानंद बिहारी पद्माकर जैसे रीतिकवियों से अलग हो जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शृंगार मूलक कविताओं में स्पष्टता उनकी अनुभूतिमूलक ब्रजभाषा देखी जा सकती है जैसे

"अति सुधो स्नेह को मारग
जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं"

उनकी भाषा में अलंकारों की भी पर्याप्त उपस्थिति दिखती है ~~कि~~ हालांकि यहाँ अलंकार चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न करने के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि स्वाभाविक मन की भावनाओं ~~के~~ प्रेरित है जैसे

"उजरनि बसी है हमारी अखियान
देखो"

इसी प्रकार लयात्मकता, चित्रात्मकता, प्रतीकात्मक जैसे काव्यभाषा गुणों के दर्शन भी इनके यहाँ होते हैं।

जैसे लयात्मकता

"ऐसी रूप अगाधे राधे राधे राधे
तेरी मिलिबे को, ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे"

निष्कर्षत: घनानंद ने काव्यभाषा के तौर ब्रजभाषा को उत्कृष्ट बनाने में अहम योगदान दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मनोवैज्ञानिक कहानी

मनोवैज्ञानिक कहानी मूलतः फ्रायड के मनविश्लेषणवाद विचारधारा को आधार बनाकर लिखी गयी। इस धारा की कहानियों के प्रमुख लेखक अज्ञेय, ~~मोहनराकेश~~ इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्र हैं।

~~अज्ञेय~~ - मनोवैज्ञानिक कहानियों में संवेदना का मूल- मानव मन के अंतरिक चरित्र का निरूपण माना है। ध्यातव्य है कि फ्रायड के अनुसार मनुष्य की मूल प्रवृत्ति- लिबिडो है। अतः मानव मन के रहस्योद्घाटन करने हेतु यह आवश्यक है कि इड, इगो, सुपरइगो में 'इड' पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

मनोवैज्ञानिक कहानी का कथानक निश्चित क्रम में ना होकर मानव मन में होने वाली अनुभूतियों / इच्छाओं आदि से निर्मित होता है। इन कहानियों में 'कैरेक्टरों' की संख्या बेहद सीमित होती है तथा मानव मन में उठित द्वंद्वों का चित्रण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कई वृत्तों तक विस्तारित होता है। फलतः यहाँ भाषा - प्रतीकात्मक हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक कहानियों का एक महत्वपूर्ण योगदान यह रहा कि यह धारा 'नई कहानी' आंदोलन हेतु कि एक आधार का निर्माण कर सकी है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्येतिहास लेखन की सुदीर्घ परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का आगमन एक टर्निंग पाइण्ट के रूप में रहा हालाँकि इनके बाबजूद इनके द्वारा स्थापित मान्यताएँ पूर्णतः निरापद नहीं।

① आचार्य शुक्ल जी तेन के प्रत्यक्षवाद से प्रभावित होकर क्षण, जाति, वातावरण को तो पर्याप्त महत्व दिया किन्तु 'परंपरा' को महत्व नहीं दे पाए। यही कारण के वह कबीर की अक्खड़ता निडरता पर इस्लामी एकेश्वरवाद का प्रभाव देख पाते हैं वहीं द्विवेदी जी इसे 'नाथ परंपरा' की देन मानते हैं। इसी प्रकार द्विवेदी जी सूरदास पर — विद्यापति, गाथा सप्तशती, आर्या का प्रभाव बताते हैं

② आदिकाल के नामकरण के संदर्भ में भी शुक्ल जी का दृष्टिकोण संकुचित ही रहा और उन्होंने चुनिंदा रचनाओं को आधार बनाकर इसे वीरगाथा काल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की संज्ञा दी। किन्तु वास्तव में यहाँ निर्विशेषमूलक नामकरण - आदिकाल अधिक उचित था।

(3) आदिकाल के सिद्ध नाथ की रचनाओं के संबंध में भी शुक्ल जी इन्हें साम्प्रदायिक रचनाएँ मानकर साहित्य के दृष्टिकोण से अलग रखा। वहीं हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने ~~साहित्य~~ इन्हें साहित्य माना। और कहा कि अगर साम्प्रदायिकता या भक्ति के आधार पर साहित्य का निर्धारण होगा तो सम्पूर्ण भक्तिकाल ही साहित्य परंपरा से विलग हो जाएगा।

(4) शुक्ल जी के साहित्येतिहास लेखन की सीमा यह रही कि वह समकालीन साहित्य पर आलोचनात्मक विवेचन नहीं कर पाए

(5) भक्ति काल के उद्भव संबंधी व्याख्या में शुक्ल जी ने इसे इस्लामी आक्रमण की उपज बताया। शुक्ल जी के शब्दों में "पौरुष से हताश जाति के पास उस समय ~~और~~ भक्ति के सवाय चारा ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया था" बाद में द्विवेदी जी इसे खारिज करते हैं और भक्तिकाल को स्वतः स्फूर्त आंदोलन के रूप में व्याख्यायित करते हैं।

(6) छायावाद को लेकर शुक्ल जी की व्याख्या तथा स्वच्छंदतावाद धारा के अवरोध में छायावाद का देखना - शुक्ल जी कभी रही बाद में स्वच्छंदतावादी धारा के चरम रूप को ही छायावाद के रूप में व्याख्यायित किया गया।

(7) प्रबंध काव्य को मुक्तक काव्य से अधिक वरीयता देने के कारण वह सूरदास, कबीर जैसे महान साहित्यकारों को पर्याप्त महत्व नहीं दे पाए।

(8). शुक्ल जी के पद्य की बजाय गद्य को महत्व देना और गद्य में भी निबंधों को महत्व देना आलोचकों की दृष्टि में स्वयं की रुचियों के अनुरूप व्याख्या को दर्शाती है

"अगर गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि आचार्य शुक्ल जी के साहित्येतिहास पूर्णतः निरापद नहीं। हालाँकि फिर भी शुक्लजी और साहित्येतिहास लेखन परंपरा में उनका सम्पूर्ण महत्व को देखते हुए उनका स्थान शीर्ष पर ही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोहन राकेश की कहानियों के विषय-वैविध्य का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश नयी कहानी आंदोलन के दौर के रचनाकार है। मोहन राकेश द्वारा 5 कहानी संग्रह लिखे गए- 'एक और जिंदगी', 'नए बादल', 'फौलाद का आकाश', 'जानवर और जानवर', आदि

मोहन राकेश की कहानियों का मूल कथ्य स्त्री-पुरुष संबंधों में स्वतंत्रताप्राप्ति उपरांत आए बदलाव है वह स्वयं लिखते है कि "उनकी कहानियाँ ~~अकेलेपन की~~ संबंध विच्छेद की यंत्रणा को अकेलेपन में झलते लोगों की कहानी है" उनकी कहानी में 'एक और जिंदगी' में 'प्रकाश' और 'बीना' के बीच संबंध विच्छेद और दोनों की जिंदगी में व्याप्त अकेलापन ही दिखाया गया है।

मोहन राकेश अस्तित्ववादी विचारधारा से प्रभावित रहे है। फलतः उनकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहानियों में भी इसका स्पष्ट प्रभाव नजर आता है। जब वह वस्तुतः अस्तित्ववाद में व्यक्ति को निर्णय स्वयं लेने एवं प्रत्येक व्यक्ति को साध्य मानने की अपेक्षा होती है ताकि निरर्थकताबोध, अजनबीपन और विसंगतिबोध से बचा जा सके। मोहनराकेश भी 'एक और जिंदगी' महानी में संबंध विच्छेद के निर्णय के उपरांत निरर्थकता बोध की स्थिति को रखते हैं। साथ ही मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त 'निर्णय न कर पाने की क्षमता' भी उनकी कहानियों में स्पष्ट: दिखती है

उनकी कहानियों में स्वतंत्रता उपरांत हुए मोहभंग, तथा नगरीकरण के उपरांत उत्पन्न हुई अकेलेपन की स्थिति का चित्रण भी दृष्टित होता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साथ ही उनकी कहानियों में यौन चेतना, पर स्त्री पर पुरुष संबंध विषय भी दर्शित होते हैं।

स्पष्टतः! यह कहा जा सकता है कि मोहन राकेश की कहानियों में नई कहानी आंदोलन की सभी विशेषताएँ दर्शित होती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20

प्रेमचंद ~~की~~ हिंदी कहानी परंपरा के सर्वप्रमुख कहानीकार है। उनके आगमन से हिंदी कहानी की ~~ह~~ कथभूमि ही नहीं बदली बल्कि कायाकल्प हो गया। प्रेमचंद ने मात्र 30 वर्ष के अंतराल में हिंदी कहानी के आदर्शवादी, उपदेशवादी स्वरूप को यथार्थवादी स्वरूप में परिवर्तित करने में अहम भूमिका निभाई।

कहानी के कायाकल्प का यही स्वरूप रचना शिल्प के स्तर पर भी दिखता है।

~~सर्वप्रथम~~ चरित्र चित्रण के दृष्टिकोण से प्रेमचंद ने कहानी परंपरा में अहम संशोधन किया। वस्तुतः पहले के चरित्र लेखक के हाथ की कठपुतली होते है थे। जिन्हें प्रेमचंद ने स्वतंत्रता दी। अब चरित्र मात्र अच्छाई व बुराई के प्रतीक ना होकर ~~स्वाभा~~ स्वाभाविक चरित्र के रूप में सामने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आठ। प्रेमचंद ने चरित्रों के स्तर पर मनोविज्ञान का भी बखूबी प्रयोग किया उदाहरण हेतु 'बड़े घर की बेटी' कहानी में स्त्री मनोविज्ञान।

"आँसू तो उनके पलकों में होते हैं वह स्त्रियों स्वभावानुसार रोने लगी"

भाषा के दृष्टिकोण पर प्रेमचंद ने सर्वप्रथम लक्ष्मण सिंह की संस्कृत निष्ठ भाषा, पंचपत और राजा शिवप्रसाद सिंह की फारसी निष्ठ भाषा में समन्वय करते हुए हिंदुस्तानी भाषा को चुना।

उनकी भाषा में सूत्र भाषा के विशेषता दर्शन होते हैं जैसे 'बूढ़ी काकी' में वे कहते हैं

"बूढ़ों के लिए अतीत के स्वप्न, वर्तमान की चिंताएं भविष्य की पीड़ाओं से रोचक प्रसंग कौन सा होता है"

भाषा के स्तर पर वह किस्सागो शैली, प्रतीक शैली इत्यादि का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भी बखूबी प्रयोग करते हैं।

कथानक के स्तर पर प्रेमचंद की कहानियाँ पहले की तुलना में बेहद परिपक्व दिखती है उनकी शुरुआती कहानियाँ आदर्शवाद से प्रेरित होने के साथ-साथ आदि, मध्य, अंत में बंटी होती थी। किन्तु अंत तक जाते-जाते कथानक बिखर गया है जिसका चरम रूप 'कफन' कहानी में दिखता है। 'पूस की रात', 'सद्गति' जैसी कहानियों में स्थिति प्रधानता अधिक मजबूत हुई है।

अतः स्पष्ट है कि प्रेमचंद की कहानियाँ रचना शिल्प के दृष्टिकोण से एक भी कहानी के विकास का चरण मात्र न होकर नींव या छलांग है। प्रेमचंद के कारण ही आदर्शवाद से यथार्थवाद में परिणित होने की जो परंपरा पदचिन्ह में 125 वर्षों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

में शैली है वह प्रेमचंद के आगमन के कारण मात्र 35 वर्ष में पूर्ण हो गयी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नंददास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नंददास अष्टछाप के आठ कवियों में सूरदास के बाद अत्यंत महत्वपूर्ण कवि है।

नंददास की रचनाओं का मूल आधार कृष्ण भक्ति है। वह कृष्ण के वात्सल्य स्वरूप, तथा श्रृंगार पक्ष पर सूरदास की भांति ही उत्कृष्ट लेखन करते है। उनकी प्रमुख रचनाओं में रसमंजरी, रसपंचाध्यायी, भँवरगीत इत्यादि है।

नंददास का 'भँवर गीत' भँवरगीत परंपरा में अपना अलग महत्व रखता है। नंददास के उद्धव सूरदास के उद्धव के भाँति, नीरस, ज्ञानी नही बल्कि सरल भावुक है। गोपियाँ से उद्धव का शास्त्रार्थ बेहद उत्कृष्ट है।

"वे उनके गुन नाहिं, गुन भये कहाँ ते
बीज बिना तरु जामे नाहिं, तुम कहाँ कहा ते"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नंददास की काव्यगत विशेषता का अहम पक्ष उनका शिल्प ~~दृष्टिकोण~~ संबंधी दृष्टिकोण है। उनकी शिल्प संबंधी उत्कृष्टता के कारण ही उन्हें "और कवि गढ़िया नंददास जड़िया" की संज्ञा दी गयी है।

नंददास की भाषा - परिनिष्ठित ब्रजभाषा है। जहाँ व्याकरणगत अशुद्धताएँ बेहद न्यूनतम है। साथ ही वह अपने काव्य में शोभाकारक धर्मों का भी बखूबी प्रयोग करते हैं तथा स्वाभावत् उनके यहाँ शब्दालंकार की बजाय अर्थालंकार की मात्रा अधिक है।

नंददास छंद के स्तर पर दोहा, चौपाई, सवैय्या, छप्पय आदि छंदों का प्रयोग अपने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

माध्यम में करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैनेन्द्र कुमार के औपन्यासिक-शिल्प पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनेंद्र कुमार मनोवैज्ञानिक औपन्यासिक धारा के महत्वपूर्ण उपन्यासकार है। जैनेंद्र के उपन्यास फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से मुख्यत: प्रभावित दिखते है। फलत: यहाँ काम चेतना प्रमुख रूप में द्रष्टव्य होती है।

जहाँ तक औपन्यासिक शिल्प का प्रश्न है तो कथानक के स्तर पर उपन्यास में घटनाओं, चरित्रों की संख्या अधिकता में नहीं दिखती। बल्कि बेहद सीमित पात्र और घटनाओं के माध्यम से जैनेंद्र स्थितियों का सहारा लेते हुए चरित्र के अंतर्मन की आवाज सुनने का प्रयास करते हैं। कथानक के स्तर पर एक अहम परिवर्तन उनके उपन्यास त्यागपत्र में दिखता है जहाँ वह उपन्यास की शुरुआत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चरित्र चित्रण के स्तर पर उनके उपन्यासों में मनोविश्लेषण वाद का प्रभाव स्पष्टतः दिख जाता है। इनके उपन्यासों में पुरुष पात्र के बजाय नारी पात्र अधिक सशक्त दिखाई देते हैं जैसे - परख - कट्टो, सुनीता, कल्याणी, मृणाल आदि

जैनेंद्र यौन संबंधों में एकनिष्ठता के अभाव को नैतिकता के अभाव की स्थिति नहीं मानते उनकी कई रचनाओं में प्रमुख स्त्रीपात्र एक पुरुष की पत्नी होकर भी अचानक दूसरे पुरुष के प्रेमिका होकर ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि इसके बाद भी वह उन्हें पतिव्रता नारी के स्तर पर ही मानते हैं

निःसंदेह जैनेंद्र का औपन्यासिक शिल्प बेहद उत्कृष्ट है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मैं ही कथा के अंतिम हिस्से को प्रस्तुत कर देते हैं और फ्लैश बैक में चलते हैं

भाषा के स्तर पर जैनेंद्र बेजोड़ हैं। उनकी भाषा में मानव मन के आंतरिक चित्रण के कारण स्वभावत: प्रतीकात्मक हो उठती है। उदाहरण के लिए त्यागपत्र की मृणाल कहती है।

"ये देख चिड़िया कितना ऊँचा उड़ जाती है। मैं चिड़िया होना चाहती हूँ।"

उनकी भाषा गद्यात्मक होते हुए भी काव्यमयी प्रतीत होती है वह कई जगह सूत्र शैली का भी प्रयोग करते हैं। उदाहरण हेतु त्यागपत्र में वे कहते हैं।

"विवाह की गंथि दो मनुष्यों के बीच दी नहीं बल्कि समाज के बीच भी है। टूटने से क्या यह टूटती है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावनात्मक रहस्यवाद ~~अधिक~~ का अधिक प्रभाव रहा। हालांकि दोनों ने एक दूसरे को प्रभावित भी किया
जैसे कबीरदास में रहस्यवाद
" तलफै बिनु बालम मोर जिया
दिन नहि चैन रात नहिं निंदिया "

~~इसी प्रकार~~
संतकाव्यधारा में नारि को माया के रूप में प्रदर्शित कर नारि का अपमान किया
वहीं सूफी काव्यधारा में नारि को सम्मान के दृष्टिकोण से देखा गया।

संतकाव्यधारा के कवियों की भाषा सधुक्कड़ी / पंचमेल खिचड़ी रही।
वहीं सूफीकाव्यधारा मूलतः ठेठ अवधी में लिखा गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा भक्तिकाल की दो सर्वप्रमुख काव्यधारा है। जिनका उस समय के समाज पर बेहद प्रभाव था। इनके निम्न अंतर है

(1) संतकाव्यधारा पर बहुत से दर्शनों का प्रभाव दिखता है जैसे- अद्वैतवाद, जैन, बौद्ध धर्म, वेदांत इत्यादि वही सूफीकाव्यधारा में सूफी दर्शन का प्रभाव है। जोकि मुख्यतः इस्लामी दर्शन में नवप्लेटोवाद के संश्लेषण से बना है

(2) संतकाव्यधारा के कवि आडम्बर, भेदभाव, साम्प्रदायिकता पर चोट करते हैं। वही सूफीकाव्यधारा में समन्वयतात्मक दृष्टिकोण के दर्शन अधिक होते है।

(3) संतकाव्यधारा पर साधनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव प्रमुख तौर पर रहा वही सूफी काव्यधारा पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रगतिवादी उपन्यास में संवेदना का महत्व होता है तथा शिल्प का महत्व न्यूनतम होता है। यही कारण है कि प्रगतिवादी उपन्यासों की भाषा बेहद सरल सहज एवं बोधगम्य होती है। यहाँ किसी भी प्रकार की प्रतीकात्मक भाषा का निषेध होता है।

प्रमुख प्रगतिवादी उपन्यास

1. यशपाल : दिव्या, दादा कामरेड, झूठा सच, कामरेड,
2. नागार्जुन - बाबा बटेश्वरनाथ
3. रांगेय राघव - घरौंदा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिंदी में प्रगतिवादी उपन्यास का दौर 1936 - 43 ई. के समय रहा उस समय की यह धारा मार्क्सी के दर्शन से सीधे तौर पर प्रभावित रही। मार्क्सी समाज की मूल संरचना को आर्थिक होने पर आधारित मानते हैं तथा साहित्य को आर्थिक ढांचे के उप उत्पाद के रूप में देखते हैं

संवेदना के स्तर पर प्रगतिवादी उपन्यास में मुख्यतः क्रांति चेतना के विकास को प्रमुखता दी जाती। यहाँ साहित्य का उद्देश्य पाठक को भावानुभूत करना नहीं बल्कि तनाव या सृजन करना है।

प्रगतिवादी उपन्यास के चरित्र योजना में नायक - निम्न वर्ग का सर्वहारा वर्ग होता है तथा वह बुर्जुआ वर्ग से संघर्ष करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः प्रपद्यवाद के तीन कवियों ने इसी दृष्टिकोण के आधार पर दावा किया कि असली प्रयोगवादी वे स्वयं हैं क्योंकि वे प्रयोग को साधन नहीं साध्य समझते हैं।

प्रपद्यवाद साहित्य में यौनचेतना संबंधी कविताओं की अधिकता रही। कहीं कहीं उनके द्वारा कविताओं में ऐसे अप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जिससे ये कविताएँ आम आदमियों की आत्मानुभूति लायक न बन सकी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद प्रयोगवादी ~~कविता~~ कविता धारा के विरोध में उपजा है। प्रपद्यवाद का प्रयोग तीन कवियों के मस्तिष्क की उपज रही - नरेश कुमार, केसरी कुमार, नलिन विलोचन शर्मा।

वस्तुतः हिंदी कविता धारा में अज्ञेय के तार सप्तक के साथ ही 1943 ई० से प्रयोगवाद का जन्म हो गया। ध्यातव्य है कि अज्ञेय इसका नामकरण प्रयोगशील चाहते थे। इनका मानना था कि प्रयोगवाद नामकरण 'प्रयोग' को साधन के बजाय साध्य के रूप में दर्शाता है। जबकि उनका मुख्य उद्देश्य प्रयोगों के माध्यम से जीवन का आत्मअनुभूत सत्य का पता लगाना है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला द्वारा रचित कविता संग्रह में तुलसीदास का भी अहम स्थान है।

वस्तुतः तुलसीदास कविता का मूल आधार तुलसीदास के जीवन से संबंधित ~~[illegible]~~ लोक कथा ही है। जिसमें तुलसीदास अपनी पत्नी ~~की~~ प्रति आसक्ति भाव के कारण पत्नी के मायके जाने पर ~~[illegible]~~ उनके पीछे - पीछे उनके मायके चले जाते है।

जहाँ पत्नी द्वारा तुलसीदास को कहे गए कुछ वाक्यों से तुलसीदास के ज्ञान चक्षु खुलते है। और वह भक्ति भाव को अपने जीवन का मुख्य आधार बना लेते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आंचलिक उपन्यास की भाषा — देशकाल से प्रभावित होती है और भाषा में अंचल के अनुरूप देशज शब्दों की भरमार होती है। हालांकि इससे एक तरफ ध्वन्यात्मकता नादात्मकता बढ़ती है तो वहीं दूसरी तरफ कहानी की सुबोधता अंचल के भिन्न किसी जगह से के लिए कठिन हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) आंचलिक कहानी का परिचय

आंचलिक कहानी का मुख्य आधार किसी अंचल के जीवन को मूलतः यथा संभव ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना है।

आंचलिक कहानी में कथानक सामान्यतः बिखर जाता है। वस्तुतः घटनाओं और चरित्रों की बहुलता इसका मूल कारण होती है।

आंचलिक कहानी में अत्यधिक चरित्र होने के बावजूद कोई भी चरित्र नायकत्व के प्रतिमान धुस नहीं कर पाता। बल्कि स्वयं अंचल ही नायक के रूप में कहानी का आधार बनता है।

आंचलिक कहानी का उद्देश्य किसी उपदेश, विचारधारा का प्रक्षेपण न होकर बल्कि सिर्फ ~~यथार्थ~~ अंचल का यथार्थ चित्रण करना होता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

से देखा जाता है। पंत कहते हैं कि

"छुने में था प्राण संग में
पावन गंगा स्नान"

छायावाद में प्रकृति के प्रति लगाव स्वभावत: है यहाँ प्रकृति सुंदरता, कवियों के पलायनवाद का आश्रय बनती है। प्रकृति की सौंदर्य चेतना का उत्कृष्ट स्वरूप यहाँ रोमांटिसिज्म की भांति दिखाई देता है।

"प्रकृति के यौवन का शृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल"

छायावादी कविता की सौंदर्य चेतना में ~~एक~~ छायावादी कवियों ने

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी कविता का साहित्य में प्रसिद्धि का एक मूल आधार इसकी सौंदर्य चेतना है। छायावादी कविताओं में शील, शक्ति सौंदर्य में से सौंदर्य क्षेत्र में है।

छायावादी सौंदर्य चेतना में मानव को सर्वप्रमुख रूप से सौंदर्य के उत्कृष्ट प्रतिमान पर रखा गया है।

"सुंदर सुमन विहग सुंदर
मानव तुम सबसे सुंदरतम"

मानव में भी नारीवादी सौंदर्य का उत्कर्ष छायावाद में दिखता है यहाँ रीतिकाल या आदिकालीन की भांति नारी भोग के रूप में चित्रित नहीं की जाती बल्कि नारी को पवित्र नजर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहीं-कहीं प्रकृति भी नारी से भी सुंदर माना है। पंत कहते हैं

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया"

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छायावाद की प्रमुख विशेषता सौंदर्य चेतना है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अकेलेपन की यंत्रणा ~~के~~ तथा अजनबीपन में बढ़ोते हैं उदाहरण हेतु मोहन राकेश का उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' तथा निर्मल वर्मा के उपन्यास 'एक चीथड़ा सुख' में यही दृष्टिकोण दिखता है।

(2) यौन चेतना संबंधी उपन्यास

शहरीकरण, स्त्रीपुरुष संबंधों में बदलाव के चलते ~~उत्पन्न संबं~~ जीवन में उत्पन्न खालीपन को भरने हेतु यौन संबंध को प्रमुखता दी जाती है। जिसका परिणाम अनिवार्यता: निसंगतिपूर्ण जीवन के रूप में सामने आता है।

उदाहरण

कृष्णा सोबती – मित्रो मरजानी
└ सूरजमुखी अंधेरे के

मृदुला गर्ग – चितकोबरा

Copyright – Drishti The Vision Found

(ख) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी की नये उपन्यास की धारा का उदय आजादी से उपजे मोहभंग की स्थिति, स्त्री-पुरुष के बदलते संबंध तथा शहरीकरण से उत्पन्न अकेलपन की यंत्रणा में झेलते लोगों की कहानी के फलस्वरूप हुआ।

नया उपन्यास धारा में मुख्यतः तीन धाराएँ विद्यमान थी

1. महानगरीय बोध की उपन्यास धारा

यहाँ शहरीकरण से उत्पन्न परिस्थितियों का चित्रण दिखता है। किस प्रकार रोजगार की तलाश में गाँव से शहर आया व्यक्ति अपनी मूल संवेदनाओं से कट जाता है और अकेलपन में विसंगतिपूर्ण निरर्थकताबोध से भरा जीवन जीने लगता है। यहाँ स्त्री-पुरुष के बदलते संबंध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) केशवदास के कविकर्म की मौलिकता पर विचार कीजिये। 15

केशवदास ~~भक्तिकाल~~ भक्तिकाल के प्रमुख कवि है जोकि अपनी रचना रामचंद्रिका के कारण राम भक्ति काव्यधारा से जुड़ते है तो वहीं रीति संबंधी मौलिकताओं के कारण वह रीतिकाल से जुड़ते है। उनके कवि कर्म की मौलिकता इस प्रकार है।

① केशवदास के कविकर्म में मौलिकता का शीर्ष स्तर उनकी संवाद योजना है ध्यातव्य है कि केशवदास अपनी संवाद योजना के कारण सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ माने जाते है। 'गागर में सागर' भर देने वाली इनकी संवाद योजना का उदाहरण द्रष्टव्य है।

" मातु कहाँ नृपतात,
गए सुरलोकहिं
क्यों, सुत शोक लिए "

Copyright – Drishti The Vision Fou

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नारी लेखन संबंधी उपन्यास धारा

इस धारा में नारीवादी समर्थक लेखिका उपन्यास लेखन करती है/ उनकी त्यष्ट मान्यता है कि स्वयंवेदना से लिखा साहित्य ही प्रामाणिक है न कि संवेदना के आधार पर लिखा साहित्य

उदाहरण
प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता
चित्रा मुद्गल - आवां

हिंदी के नया उपन्यास धारा के शिल्प के दृष्टिकोण से भाषा बेहद सजग, संभावनाशील, प्रतीकात्मक दिखाई देती है। यहाँ चरित्र - स्थितियों के हाथ की कठपुतली के रूप में नजर आते हैं। कथानक का ढांचा पूर्णतः बिखर जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

निश्चित तौर पर केशवदास के काव्यकर्म में मौलिकता के दर्शन होते हैं किन्तु उनकी यह मौलिकता अधिकांश जगह उनके काव्यकर्म में अवरोध उत्पन्न करती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision F

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) केशवदास की छंद विविधता उनकी मौलिकता का अहम् कारण है। हालांकि शुक्ल जी छंद विविधता को ~~एक~~ बुराई के दृष्टिकोण से देखते हैं ~~क्योंकि है कि~~ : वह कहते है कि छंद प्रयोग की अधिकता ने भाषा की गतिशीलता को प्रभावित किया

(3) केशवदास के काव्य में अन्योक्ति अलंकार का प्रचुर प्रयोग उपलब्ध होता है

(4) श्रृंगार रस का विभाजन, अलंकार विभाजन उनकी मौलिकता को दर्शाते हैं

(5) केशवदास के कवि कर्म में एक अहम विशेषता ~~अह~~ रामचंद्रिका के रूप में यह है कि वह राम की कथा में राजसी वातावरण का समावेश कर पाते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation